मधुबन ओम् शान्ति अंक 389 दिसम्बर 2024

पत्र-पुष्प

“सदा सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करने वाले सन्तुष्टमणि बनो”

(याद पत्र, दादी जी – 19-11-2024)

प्राणेश्वर अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा स्वमान की सीट पर एकाग्र रह सबको सन्तुष्ट करने वाले और सदा सन्तुष्ट रहने वाले, सदा निर्विघ्न, विघ्न-विनाशक सेवाधारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण सन्तुष्टमणियां, बाबा के नयनों के नूर सभी अलौकिक भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - समय प्रति समय प्यारे बापदादा ने सच्चे सेवाधारियों की यही विशेषता सुनाई है कि सेवाधारी वह है जो सेवा में वा स्व पुरुषार्थ में सदा सन्तुष्ट रहता हैं और जिन्हों की सेवा के निमित्त बनता है उन्हों को भी सन्तुष्ट करता है। बाबा कहते ब्राह्मण माना समझदार, उन्हें कोई कितना भी असन्तुष्ट करने की कोशिश करे वह कभी असन्तुष्ट नहीं हो सकते लेकिन आन्तरिक सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियां हैं और ब्राह्मणों के लिए गाया हुआ है कि ‘अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में, तो फिर असन्तुष्टता क्यों? तो मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सदा सन्तुष्ट रह प्रसन्नता की लहर फैलाते चलो। भले कोई बड़े से बड़ी परिस्थिति भी आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म-भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त रह सदा प्रसन्नचित रहो। प्रसन्नता व सन्तुष्टता की झलक आपके चेहरे से दिखाई दे। अगर कोई सेवा असन्तुष्ट बनाये तो वह सेवा, सेवा नहीं है। सेवा का अर्थ ही है मेवा देने वाली सेवा। अगर सेवा में असन्तुष्टता है तो भले सेवा छोड़ दो लेकिन सन्तुष्टता कभी नहीं छोड़ो। सदा हद की चाहना से परे, सम्पन्न रहो तो समान बन जायेंगे क्योंकि ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है लेकिन यह अनुभव तभी कर सकेंगे जब मन्सा में भी अपवित्रता का अंश न हो। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश वा सन्तुष्ट रखना - यह भी अपने को धोखा देना है। तो चेक करो और फाइनल पढ़ाई में पास होने के लिए तीन सर्टीफिकेट ले लो - एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट, दूसरा - बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा - परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। यदि यह तीनों सर्टीफिकेट लिये हैं तो अपने को सदा बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेंगे। वह दुआ मांगेंगे नहीं लेकिन सर्व की दुआयें उनके आगे स्वत: आयेंगी। तो बोलो, मीठे मीठे भाई बहिनें स्वयं को सर्व की दुआओं से सम्पन्न अनुभव करते हो ना!

बाकी वर्तमान समय मधुबन बेहद घर में खुशनुमा मौसम के बीच देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे अव्यक्त मिलन के इस अलौकिक पार्ट का अनुभव करने, स्वयं को सर्वशक्तियों से सम्पन्न बनाने के लिए भाग-भाग कर आ रहे हैं। बापदादा की अवतरण भूमि के शक्तिशाली प्रकम्पन्न, योग तपस्या का वातावरण, अनेक महारथी अनुभवी भाई बहिनों की क्लासेज़ सभी को खूब भरपूर कर देती हैं। आप सभी भी अपने टर्न अनुसार मधुबन घर में आने की तैयारी कर रहे होंगे।

अच्छा – सर्व को याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

1) बापदादा चाहते हैं कि हर एक बच्चा जब भी किसी से मिले तो उसे सन्तुष्टता का सहयोग दे। स्वयं भी सन्तुष्ट रहे और दूसरों को भी सन्तुष्ट करे। सदा यही स्वमान स्मृति में रहे कि मैं सन्तुष्टमणि हूँ। मुझे स्वयं सदा सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है, इसी स्वमान की सीट पर सदा एकाग्र रहना।

2) आज के समय में टेन्शन और परेशानियाँ बहुत हैं, इस कारण असन्तुष्टता बढ़ती जा रही है। ऐसे समय पर आप सभी सन्तुष्टमणियाँ अपने सन्तुष्टता की रोशनी से औरों को भी सन्तुष्ट बनाओ। पहले स्व से स्वयं सन्तुष्ट रहो, फिर सेवा में सन्तुष्ट रहो फिर सम्बन्ध में सन्तुष्ट रहो तब ही सन्तुष्टमणि कहलायेंगे।

3) बापदादा बच्चों को निरन्तर सच्चे सेवाधारी बनने के लिए कहते हैं, लेकिन अगर नाम सेवा हो और स्वयं भी डिस्टर्ब हो, दूसरे को भी डिस्टर्ब करे, ऐसी सेवा न करना अच्छा है क्योंकि सेवा का विशेष गुण सन्तुष्टता है। जहाँ सन्तुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से, चाहे सम्पर्क वालों से, वह सेवा न स्वयं को फल की प्राप्ति करायेगी न दूसरों को। इससे स्वयं अपने को पहले सन्तुष्टमणी बनाए फिर सेवा में आओ तो अच्छा है। नहीं तो सूक्ष्म बोझ चढ़ता है और वह बोझ उड़ती कला में विघ्न रूप बन जाता है।

4) सदा निर्विघ्न, सदा विघ्न-विनाशक और सदा सन्तुष्ट रहना तथा सर्व को सन्तुष्ट करना - सेवाधारियों को यही सर्टीफिकेट सदा लेते रहना है। यह सर्टीफिकेट लेना अर्थात् तख्तनशीन होना। सदा सन्तुष्ट रहकर सर्व को सन्तुष्ट करने का लक्ष्य रखो।

5) जिस आत्मा को सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होगी, वह सदा सन्तुष्ट होगी। उसके चेहरे पर सदा प्रसन्नता की निशानी दिखाई देगी। सेवाधारी जब स्व से और सर्व से सन्तुष्ट होते हैं तो सेवा का, सहयोग का उमंग-उत्साह स्वत: होता है। कह करके कराना नहीं पड़ता, सन्तुष्टता सहज ही उमंग-उल्हास में लाती है। सेवाधारी का विशेष यही लक्ष्य हो कि सन्तुष्ट रहना है और करना है।

6) जितना अपने को सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव करेंगे उतना सन्तुष्ट रहेंगे। अगर जरा भी कमी की महसूसता हुई तो जहाँ कमी है वहाँ असन्तुष्टता है। भल अपना राज्य नहीं है इसलिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है परन्तु यहाँ प्राब्लम तो खेल हो गई है, हिम्मत रखने से समय पर सहयोग मिल जाता है इसलिए अपनी सन्तुष्टता के साथ-साथ स्वयं की श्रेष्ठ स्थिति से सर्व आत्माओं को सन्तुष्टता का सहयोग दो।

7) कराने वाला करा रहा है, मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रहा हूँ – इस स्मृति में रहना यही सेवाधारी की विशेषता है। इससे सेवा में वा स्व पुरुषार्थ में सदा सन्तुष्ट रहेंगे और जिन्हों के निमित्त बनेंगे उन्हों में भी सन्तुष्टता होगी। सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को रखना - यही सच्चे सेवाधारी की विशेषता है।

8) ब्राह्मण अर्थात् समझदार, वे सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रहेंगे और दूसरों को भी रखेंगे। अगर दूसरे के असन्तुष्ट करने से असन्तुष्ट होते तो संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का सुख नहीं ले सकते। शक्ति स्वरूप बन दूसरों के वायुमण्डल से स्वयं को किनारे कर लेना अर्थात् अपने को सेफ कर लेना, यही साधन है इस लक्ष्य को प्राप्त करने का।

9) जो दिल से सेवा करते वा याद करते हैं, उन्हों को मेहनत कम और सन्तुष्टता ज्यादा होती और जो दिल के स्नेह से नहीं याद करते, सिर्फ नॉलेज के आधार पर दिमाग से याद करते वा सेवा करते, उन्हों को मेहनत ज्यादा करनी पड़ती, सन्तुष्टता कम होती। चाहे सफलता भी हो जाए, तो भी दिल की सन्तुष्टता कम होगी। यही सोचते रहेंगे - हुआ तो अच्छा, लेकिन फिर भी, फिर भी... करते रहेंगे और दिल वाले सदा सन्तुष्टता के गीत गाते रहेंगे।

10) सन्तुष्टता तृप्ति की निशानी है। अगर तृप्त आत्मा नहीं होंगे, चाहे शरीर की भूख, चाहे मन की भूख होगी तो जितना भी मिलेगा, तृप्त आत्मा न होने कारण सदा ही अतृप्त रहेंगे। रॉयल आत्मायें सदा थोड़े में भी भरपूर रहती हैं, जहाँ भरपूरता है वहाँ सन्तुष्टता है।

11) जो सेवा असन्तुष्ट बनाये वो सेवा, सेवा नहीं है। सेवा का अर्थ ही है मेवा देने वाली सेवा। अगर सेवा में असन्तुष्टता है तो सेवा छोड़ दो लेकिन सन्तुष्टता नहीं छोड़ो। सदा हद की चाहना से परे, सम्पन्न रहो तो समान बन जायेंगे।

12) संगमयुग का विशेष वरदान सन्तुष्टता है, इस सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ हैं। असन्तुष्टता का बीज स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। आप ब्राह्मणों का गायन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', तो फिर असन्तुष्टता

क्यों? जब वरदाता, दाता के भण्डार भरपूर हैं, इतनी बड़ी प्राप्ति है, फिर असन्तुष्टता क्यों?

13) जो सन्तुष्टमणियां हैं - वह मन से, दिल से, सर्व से, बाप से, ड्रामा से सदा सन्तुष्ट होंगी; उनके मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी। चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने वाली सामना करने भी आती रहे, चाहे शरीर का कर्म-भोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त आत्मा सन्तुष्टता के कारण सदा प्रसन्नता की झलक में चमकता हुआ सितारा दिखाई देगी।

14) सन्तुष्ट आत्मायें सदा नि:स्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेंगी; किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेंगी - न भाग्यविधाता पर, न ड्रामा पर, न व्यक्ति पर, न शरीर के हिसाब-किताब पर कि मेरा शरीर ही ऐसा है। वे सदा नि:स्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाली होंगी।

15) संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है, यही ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति है। सन्तुष्टता और प्रसन्नता नहीं तो ब्राह्मण बनने का लाभ नहीं इसलिए सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो, इसी में सच्चा सुख है, यही सच्ची सेवा है।

16) सन्तुष्टता के गुण को धारण कर हद के मेरे तेरे के चक्र से मुक्त रहो। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बनाती है। सन्तुष्टमणियां सदा बापदादा के दिलतख्तनशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, विश्व परिवर्तन की सेवा के ताजधारी बन अपने सम्पन्न स्वरुप में स्थित रहती हैं। यह सन्तुष्टता ही ब्राह्मण जीवन का जीयदान है।

17) ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है। इसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश वा सन्तुष्ट रखना - यह भी अपने को धोखा देना है।

18) कितना भी कोई आपकी सन्तुष्टता को हिलाने की कोशिश करे, लेकिन आप हिलना नहीं, सदा सन्तुष्ट रहना। सदा मुखड़ा मुस्कराता रहे। कैसी भी हिलाने वाली परिस्थिति ऐसे ही अनुभव हो जैसे पपेट (कठपुतली) शो देख रहे हैं। माया का वा प्रकृति का यह भी एक शो है। उसे साक्षी स्थिति में सदा सन्तुष्टता के स्वरूप में, अपनी शान में रहते हुए देखो – सन्तुष्ट मणि हूँ, सन्तोषी आत्मा हूँ... ये है संगम का श्रेष्ठ शान।

19) इस फाइनल पढ़ाई में हर एक बच्चे को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं – एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट - दूसरा - बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा - परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। परिवार में जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भक्त भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे।

20) ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही आप पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। स्वयं भी सन्तुष्ट दूसरे भी सन्तुष्ट। अगर असन्तुष्ट करने वाला आपको असन्तुष्ट करने की कोशिश करे तो आप शीतलता को धारण करना। वह आपको असन्तुष्ट करे आप सन्तुष्टता का जल डालना, वो आग जलाये आप पानी डालना।

21) सदा आज्ञाकारी बनकर रहो तो सर्व की दुआयें मिलेंगी। उन दुआओं के प्रभाव से दिल वा मन सदा सन्तुष्ट रहेगा। बाहर की सन्तुष्टता नहीं लेकिन मन की सन्तुष्टता और मन की सन्तुष्टता यथार्थ है, आज्ञाकारी हैं, दुआएं हैं तो सदा स्वयं और सर्व डबल लाइट रहेंगे। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित दिखाई देगा। प्रसन्नतचित अर्थात् सर्व प्रश्नों से न्यारा। क्यों, क्या, कैसे यह सब प्रश्न समाप्त।

22) सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में हो। सुख-चैन की स्थिति में हो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुआयें दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं, लेकिन दुआयें स्वयं उसके आगे स्वत: ही आयेगी। ऐसे सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी बनो।

23) सबसे सहज सदा सन्तुष्ट रहने की विधि है – अपने सामने सदा कोई न कोई विशेष प्राप्ति रखो। बाप से क्या-क्या मिला, कितना मिला है, अपनी प्राप्तियों को देखो – ज्ञान के खजाने की प्राप्ति कितनी है, योग से शक्तियों की, दिव्यगुणों की प्राप्तियाँ कितनी हैं, प्रैक्टिकल नशे में, खुशी में रहने की प्राप्तियाँ कितनी हैं? कभी कोई, कभी कोई प्राप्ति को सामने रखते हुए सन्तुष्ट रहो।

24) सदा हर परिस्थिति में, परिस्थिति बदले लेकिन स्थिति नहीं बदले। स्थिति सदा खजानों से सम्पन्न और सन्तुष्ट रहे तो परिस्थिति आयेगी और चली जायेगी। परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षी बन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो।

25) संगमयुग है ही सन्तुष्टता का युग। तो सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो। आपस में कभी कोई खिटखिट न हो क्योंकि माला बनती है सम्बन्ध से। अगर दाने का दाने से सम्पर्क नहीं हो तो माला नहीं बन सकती। तो माला के मणके हैं इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में भी सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। आप सभी परिवार वाले हो, परिवार का अर्थ ही है सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट

करना।

26) श्रेष्ठ कर्म की निशानी है – स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं – मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हो। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वत: दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है या और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है।

27) फ़रिश्ता बनना अर्थात् सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। चाहे कुछ भी जाये, कोई इन्सल्ट कर दे, कोई नीचे-ऊपर करने की कोशिश करे सबमें सन्तुष्ट। दाता के बच्चे दाता हो तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते।

28) सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। स्वयं से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट रहो। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है। कितना भी कड़ा पेपर आ जाये लेकिन सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। अपने अनादि स्वरूप में स्थित होने से स्वयं भी स्वयं से सन्तुष्ट रहेंगे और औरों को भी सन्तुष्टता की विशेषता अनुभव कराते रहेंगे।

29) इस संगमयुग में विशेष बापदादा की देन सन्तुष्टता है। एक सन्तुष्टता की विशेषता और विशेषताओं को भी सहज अपने समीप लाती है, लेकिन सदा सन्तुष्ट रहो। परिस्थिति कितनी भी बदले लेकिन सन्तुष्टता की स्थिति को परिस्थिति बदल नहीं सकती। पर-स्थिति है ही बदलने वाली। लेकिन स्व सन्तुष्टता की स्थिति सदा प्रगतिशील है।

30) तपस्या का अर्थ ही है - सन्तुष्टता की पर्सनालिटी नयन चैन में, चेहरे में, चलन में दिखाई दे। सन्तुष्टमणि अर्थात् बेदाग मणि। सन्तुष्ट आत्मा सदा प्रसन्नचित्त स्वयं को भी अनुभव करेगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे। तो यथार्थ अनुभव द्वारा सन्तुष्ट आत्मा बनो।

31) अब मास्टर रचयिता बन अपनी रचना को शुभ भावना से व शुभ-चिन्तक बन, भिखारियों को उनकी मांग प्रमाण सन्तुष्ट करो। अब महादानी और वरदानी बनो तब सर्व को सन्तुष्ट कर सकेंगे। जो वरदानी-मूर्त हैं; वह स्वयं स्वरुप बन, औरों को देने वाले दाता बन जाते हैं। विशेष अटेन्शन – सदा स्वयं से और सर्व से सन्तुष्ट रहना ही है, तब ही अनेक आत्माओं के इष्ट बन सकेंगे व अष्ट देवताओं में आ सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

“सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की विधि - हर संकल्प, बोल, कर्म को ब्रह्मा बाप से मिलाओ”

(आमंत्रित भाईयों की भट्ठी में - गुल्जार दादी जी की प्रेरणायें 29-07-08)

जो बाबा चाहता है कि मेरे बच्चे सब नम्बरवन बनें। नम्बरवन क्वालिटी, माला में तो एक-दो नम्बर आयेगा लेकिन नम्बरवन क्वालिटी के बनें। ऐसा ही लक्ष्य सभी ने रखा है ना! तो यहाँ जितनी कमाई करना चाहें उतनी कर सकते हैं क्योंकि एक तो वायुमण्डल का भी प्रभाव पड़ता है, दूसरा संगठन का भी प्रभाव पड़ता है, तीसरा लक्ष्य का भी प्रभाव पड़ता है। हम सभी का लक्ष्य ही है हमको बाप समान बनना ही है। सभी को यही लक्ष्य होना चाहिए, हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा।

सम्पन्नता और सम्पूर्णता दोनों ही बातें एक दो से टैली रखती हैं। तो सम्पन्नता में देखें कि हमारे पास कितने खजाने हैं! बाबा ने हमें क्या-क्या दिया है? जैसे मानो हमारी चार सब्जेक्ट हैं, ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। तो ज्ञान से हमें कौन से खजाने मिले? ज्ञान से हमें मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिला, योग से शक्तियों का वरदान मिलता है, प्राप्ति होती है। धारणा से दिव्य गुणों का खजाना मिलता है और सेवा अगर हम नि:स्वार्थ करते हैं तो सेवा से हमें दुआयें मिलती हैं। साथ में हमारे सम्बन्ध और सम्पर्क से हमें खुशी मिलती है। सबसे बड़े में बड़ा खजाना है - संगमयुग के समय का खजाना। इस संगमयुग के समय का महत्व इतना है जो कमाल देखो, एक ही जन्म वो भी पूरा नहीं, आज यज्ञ की स्थापना को 72 वर्ष हो गये। आप लोग कब आये? तो वो एक जन्म भी पूरा रहीं। फिर भी 21 जन्म की गैरेन्टी हो गई ना। तो इस समय का महत्व बहुत रखना चाहिए। कई कहते हैं 5 मिनट ही तो बैठे, लेकिन ये पांच मिनट नहीं कई घण्टे के समान है। तो समय का खजाना भी बाबा ने हमको दिया है। उन खजानों

को हमने कितना जमा किया! क्या हम समय के खजाने को सफल कर रहे हैं? अगर कोई बात हो जाती है तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं। व्यर्थ संकल्प का चलना, यह संगमयुग का कितना नुकसान हुआ! व्यर्थ संकल्पों की गति बहुत तीव्र होती है। उसके लिए बाबा कहता है, धारणा कितनी श्रेष्ठ है, सेकेण्ड में बिन्दु लगाओ। चेक करो सचमुच बिन्दू लगती है? लगाने चाहते हैं बिन्दु, बन जाता है क्वेश्चनमार्क। अगर समय के खजाने का महत्व है तो और खजाने हमारे साथ आ ही जाते हैं। तो यह चेक करें कि खजानों से मैं सम्पन्न हूँ? खजाने बाबा ने दिया है, हमने सुना है, समाया है? सुनना अलग चीज़ है, समाना अलग चीज़ है। भट्ठी में अभी यह चेकिंग करने का टाइम है।

बाबा कहता है बस ड्रामा को याद करो और ड्रामा पर स्थित हो जाओ तो कोई भी फिक्र या चिन्ता जो भी होता है वो नहीं होगा। हम ड्रामा-ड्रामा कह रहे हैं मानों अन्दर सोचते हैं। लेकिन ड्रामा कहा, तो ड्रामा कहने के बाद हमारी बेफिकर स्थिति चाहिए। अगर वो हमारी स्थिति नहीं है तो वो ड्रामा का ज्ञान हमने समाया तो नहीं ना! सुनने के टाइम अच्छा लगता है। जैसे किसी की लाटरी निकलती है तो उसका चेहरा चमकता है। तो हमारा चेहरा सदा खजानों से सम्पन्न लगता है? भरपूर चीज़ और खाली चीज़ दोनों में फर्क होता है ना। जैसे हमने बाबा का, दीदी का, दादी का चेहरा देखा तो चेहरे से ही लगता था कि कुछ है। तो ऐसे ही हमारा चेहरा और चलन सम्पन्न की है? क्योंकि भट्ठी में बाबा हमको सम्पन्न देखने चाहता है।

यह सारे खजाने अविनाशी हैं, देने वाला कौन? भगवान ने मेरे को दिया है, आज कोई प्राइम मिनिस्टर कुछ देता है तो उसे कितना सम्भाल के रखते हैं। भगवान हमको देता है तो उसका कितना मूल्य हमको होना चाहिए! हमको चेक करना चाहिए कि शक्तियों का खजाना हमारे पास जमा है! जमा की निशानी क्या है, जब उस शक्ति की आवश्यकता है उस समय वो हमारे ऑर्डर से आवे। यह प्रैक्टिस बार-बार करो क्योंकि कर्मयोगी जब बनते हैं तो कर्म और योग का बैलेन्स कभी कम हो जाता है। कर्म की तरफ अटेन्शन ज्यादा चला जाता है, योग का बैलेन्स थोड़ा कम हो जाता है इसीलिए बाबा कहते हैं कर्म करते हुए बीच-बीच में चेक करो और चेंज करो, लिंक जोड़ो। कोई भी चीज का लिंक जोड़ा जाता है तो उसमें ताकत आती है। जो श्रीमत में जी हाज़िर करता है उसके पास बाबा भी जी हाज़िर रहता है। वो अनुभव हमने प्रैक्टिकल में किया है। तो बाबा जो कहता है वो करता है सिर्फ हम उसका फायदा नहीं उठाते हैं। हम और बातें देखते हैं ना कि कायदा नहीं, ऐसे नहीं होता है। हमको तो कोई कायदा वायदा पता ही नहीं था। बाबा सचमुच समय पर मदद करता है। बंधा हुआ है। सिर्फ बाबा नहीं कहो मेरा बाबा कहो। अधिकार से कहो। हम उन बातों को प्रैक्टिकल में लाते नहीं हैं। मानो खजाने बाबा ने दिया है लेकिन खजाने को जमा रखना हमारा काम है। शक्तियाँ इतनी हैं लेकिन समय पर वो शक्ति यूज़ होती हैं। याद भी आती हैं कि शक्ति लेकर यह काम करें? बाबा की ताकत कोई कम है क्या! बाबा की ताकत ऐसी है जो बुद्धिवानों की बुद्धि बनके काम करा लेता है। जिसको हम समझते हैं असम्भव है बाबा के लिए क्या असम्भव है! लेकिन हम योगयुक्त हों। हम हिम्मत रखते हैं, बहादुरी भी करते हैं, लेकिन थोड़ा व्यर्थ संकल्प चलता इसलिए हमारे कर्तव्य में पूरी सफलता मिले वो थोड़ा कम हो जाता है।

अभी भट्ठी में हमको बाबा ने सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का मौका दिया है। बाबा कभी नहीं कहता था कि जाओ देखो, करो, फिर देखते हैं क्या होता है। पूरा निश्चय के साथ कहता था जाओ। हमारे साथ भगवान है इस निश्चय से हम करें तो क्या बड़ी बात है! आजकल सभी ट्रायल करते हैं, प्रैक्टिकल में इतना निश्चित निश्चिन्त नहीं रहते हैं। अगर निश्चय है तो उसका प्रुफ है विजय होना चाहिए क्योंकि कहावत है निश्चयबुद्धि विजयन्ती। यह जो तीन शब्द है निश्चयबुद्धि, निश्चित और निश्चिन्त। यह प्रैक्टिकल में हम लायें तो क्या बड़ी बात है। आखिर तो विजय हमारी है, यह निश्चित है लेकिन विजय के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। सम्पन्नता माना हम सर्व खजाने जमा करें और वह सर्व खजाने समय पर काम में आवें। बाबा ने कहा था खजाने बढ़ाने की चाबी है, उनको जितना यूज़ करेंगे उतना खजाने आपके बढ़ेंगे।

जैसे बाबा रोज़ अलग-अलग वरदान देते हैं और बहुत श्रेष्ठ वरदान देते हैं लेकिन वह प्रैक्टिकल लाइफ में नहीं आते हैं, उसका कारण क्या है? पढ़ करके हमको कितनी खुशी होती है लेकिन उसका प्रैक्टिकल में लाभ होवे, उसके लिए बाबा ने कहा वरदान है बीज। बीज फल कब देता है? जब पानी और धूप लगती है तभी फल देता है। आप भी रियलाइज करो, वर्णन करो, प्रैक्टिकल में लाओ तो फल देगा इसलिए हम लोगों को अभी हर खजाने के महत्व को जानकरके सम्पन्न बनना है, भरपूर रहना है। खाली चीज़ हिलती रहेगी सम्पन्न भरपूर रहती है वो हिलेगी, टूटेगी नहीं। इसलिए हमें आज यह संकल्प करना है - हमको सम्पन्न बनना ही है।

दूसरी बात - खजाने को जमा करने के तीन तरीके हैं। एक तो बाबा कहता है अपने पुरुषार्थ से जमा करना है दूसरा बाबा कहता है कि सन्तुष्ट रहो और जिससे कनेक्शन में आते हो उसे सन्तुष्ट करो। तीसरा – निःस्वार्थ सेवा करो, बाबा करावनहार बन करा रहा है, तो मैंपन नहीं रहेगा, अगर यह धारणायें हमारी

अच्छी हैं तो खजाने जमा होते रहते हैं। तो हम अपने को चेक करें कि हम इन तीनों ही तरीके से खजाने को अमर-अविनाशी बना रहे हैं! अगर यह तीनों तरीकों से जमा नहीं कर रहे हैं तो समय पर काम में नहीं आयेंगे। समय पर यूज़ करने का अभ्यास हमको करना है।

बाबा कहता था कि हरेक के प्रति शुभ भावना रखो। भले मुख से न बोलो, लेकिन अन्दर से दिल से शुभ भावना देते रहो। वो शर्म से भी, भले माफी न भी मांगे तो भी परिवर्तन तो होगा ही। संगठन में कोई न कोई बातें तो होती ही रहती हैं। ऐसी धारणायें हमको करनी है, बाबा समान हमको बनना है, सम्पूर्ण स्थिति तो यही है ना। पहले जो भी संकल्प हम करें, संकल्प करने के बाद भले सोचें बाबा के समान हुआ नहीं लेकिन संकल्प करने के पहले ही हम बाबा से मिलायें कि बाबा का यह संकल्प रहा। चेक पहले करें कर्म बाद में करें। कर्म होने के बाद दाग तो लग ही जाता है। पहले चेक करें तो समान बनना बहुत आसान है। बाबा के सामने ऐसे बच्चे नहीं थे क्या, जो बाबा को बाबा समझके उस रीति से कभी नहीं चलें, ऐसे भी बच्चे आये बाबा के सामने लेकिन बाबा ने कभी मुरली में यह नहीं कहा कि मीठे और कड़ुवे बच्चों को यादप्यार। बाबा को पता था कि कड़ुऐ बच्चे भी हैं। बाबा कहता था मीठे-मीठे कहने से ही मीठे बनेंगे। अन्त तक माया से हार जीत होती रहेगी, लेकिन आखिर वो तंग होकर परिवर्तन होगी। मैं भी बदलके दिखाऊं और उसको भी बदलूं। तो बाबा के समान सम्पन्न बनना है और सम्पूर्ण बनना है। इसमें बहुतकाल का पुरुषार्थ चाहिए तभी हमको बहुतकाल की प्रालब्ध मिलेगी। बाबा तो यही चाहता है कि फर्स्ट जन्म में आप आओ। तभी बाबा कहेगा वाह! मेरा बच्चा वाह! अच्छा – ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"जैसे बाबा हम सबके लिए दर्पण हैं, ऐसे हमारे कर्म औरों के लिए दर्पण बन जायें" (11-09-06)

हम सबको पता है कि अभी यह पतित पुरानी दुनिया विनाश हुई पड़ी है और नई दुनिया स्थापन करने के लिए हम आत्मा भी सतोप्रधान, शरीर भी सतोप्रधान, तत्व भी सतोप्रधान बन रहे हैं। प्रैक्टिकली हरेक अनुभव करे, बाबा सर्वशक्तिमान है, ज्ञान का सागर है। बाबा प्यार का सागर, सुख का सागर भी है। इतना भी बुद्धि में आ गया, तो सागर के कण्ठे पर कितना अच्छा है क्योंकि शीतल वायु बहुत अच्छी है। तो क्लास में आना भी सागर के कण्ठे पर आना है, साइलेन्स में वॉक करना, साइलेन्स में बाबा की बातें सुनना, इससे कितना सुख मिलता है।

समर्पण वो जिसके कर्म दर्पण जैसे हों। हम सबके सामने बाबा हमारा दर्पण है। फिर हमारा कर्म ऐसा हो जो औरों के लिए दर्पण बन जाये क्योंकि कर्म बड़े बलवान हैं, परमात्मा सर्वशक्तिमान है। श्रेष्ठ कर्म करने से अच्छी शक्ति आयेगी। बाबा कहता है सिर्फ अंगुली दे दो बस, लेकिन अंगुली हाथ के बगैर तो आयेगी नहीं। तो हाथ भी आ गया, हाथ हार्ट के बगैर नहीं आयेगा, होशियार है भगवान, फिर गले लगा लिया। लेकिन बुद्धि समर्पण होती है दिल से, दिल में सच्चाई नहीं है तो बुद्धि ठीक काम नहीं करती है।

आठ शक्तियों में परखने की शक्ति नम्बरवन है। यह राइट है, राँग है, समेट लिया या समा लिया। जिसको परखने की शक्ति नहीं है वो जौहरी नहीं है, अनाड़ी है। जौहरी की आँख तेज हो, दृढ़ता की शक्ति हो और एक परमात्मा से प्यार हो। सौदा ऐसा हो। मेरे लिए यह ज्ञान रत्न हैं, वैल्यू उसकी है। उन्हें परखने वाले हम बाबा के रत्नागर बच्चे हैं। उनसे फिर सेवा ऐसे होगी जैसे जादूगर। एक सेकेण्ड में क्या से क्या बन जाता है और क्या बना देता है। कल हम क्या थे, आज बाबा ने कैसा बना लिया। कल का आया हुआ बच्चा भी बदल जाता है। समझ लिया ना, यह ज्ञान रत्न हैं।

नियत साफ मुराद हांसिल, सारी वैल्यू नियत पर है। नियत में दिल की भावना भी आती है। सच्ची है या नहीं है। कहते हैं इसकी नियत ठीक नहीं है, सम्भालना। इसके सूक्ष्म वायब्रेशन आते हैं। तो हम अपनी नियत देखें। हैवान और इन्सान। अन्दर की दुनिया कुछ और है और बाहर की दुनिया कुछ और। अपने से पूछो कि अन्दर की दुनिया हमारी कैसी है। जिसकी नियत अच्छी है, उसकी अन्दर की दुनिया कैसी होगी! हम सतयुगी दुनिया बनाने वाले हैं, पुरानी दुनिया से हमें वैराग्य है! हम क्या देखें? बड़ी-बड़ी बिल्डिग हैं, उसमें है ही क्या! शीशा, गिरेगी तो क्या होगा! वो दुनिया को क्या समझते हैं और हम दुनिया को क्या समझते हैं। ऐसी दुनिया में हम कैसे रहें? ऐसी दुनिया में धन्धा भी करना है, बाल बच्चों को भी सम्भालना है। बाबा कहता है ऐसी

दुनिया में रहते हुए निमित्त मात्र रहो, किसी को अपना नही समझो, अपना समझ किसी में लगाव नहीं रखो। ऐसे रहने से जिनके साथ रहेंगे उनका कल्याण होगा। हम कल्याण भाव से रहते हैं, बाकी और कोई भाव नहीं है। कुछ नहीं चाहिए, अन्दर से दिखाई पड़े कि इतना इसको वैराग्य है। देह के भान से परे। अभिमान तो नहीं है, कोई दु:ख-सुख का प्रभाव तो नहीं है! तो दुनिया में रहते पश्चाताप नहीं करना है। ऐसा नहीं पहले खा लो फिर रो लो। यहाँ तो पाप की दुनिया है, पीस का तो देवाला है। प्यार तो है ही नहीं, झूठ है। ऐसे में रहते उन्हों को बदलने के लिए रहो और हमारे पास अन्दर बहुत कुछ है उनको बदलने के लिए। इसका अभिमान नहीं है, पर है। फिर हम जिनके कान्टेक्ट में आते हैं अगर उन्हें कोई प्राप्ति नहीं होती है, तो उल्टी-सुल्टी बातें कर लेते हैं। जब तक लगाव है तब तक प्रभाव नहीं पड़ता है। भले ज्ञान सुने न सुने पर रिगार्ड अच्छा होगा। चलन हमारी ऐसी हो, सदा ही महान आत्मा की तरह मेहमान होकर रहें। मेहमान कभी किसी चीज़ को अपना समझा, माना चोर हो गया। अन्दर में 100 प्रतिशत प्योरिटी हो।

स्वयं की, बाप की और समय की पहचान, इससे परखने की शक्ति बढ़ती है। जैसे आँख देखती नहीं है तो परखने की शक्ति कहाँ से आयेगी। परखने की शक्ति उसमें आयेगी जिसमें पुराना कोई दाग भी न रहे। खुद हमारे में पुराना जो भी किया हुआ है उसका दाग तो क्या निशान मात्र भी न रहे। इतना हम ध्यान रखें, बाबा ने हमारी वैल्यू बहुत बढ़ा दी है।

स्मृति में रहना औरों को स्मृति दिलाना, किसके बच्चे हैं। बोलना थोड़ा लेकिन कीमती रत्न जैसा हो, किसके काम का हो। दिल को टच हो। नहीं तो नहीं बोलो, वायब्रेशन दो, यह नहीं सोचो यह समझेगा नहीं। यह भी बाबा ने समझाया हुआ है, एक बार नहीं, दो बार नहीं, भले अभी याद नहीं आयेगा पर कोई घड़ी आयेगी जब उसको यह सीन याद आयेगी, यह समय था जो मैंने गंवाया।

मीरा कहती थी यह आँखे प्रभु दर्शन की प्यासी। बाबा हमें दर्शनीय मूर्त बना रहा है, तो बाप से मिली हुई शान्ति, दृष्टि से अनुभव करें। हमारी दृष्टि कैसी हो। दृष्टि में फिर वृत्ति अच्छी हो। कभी भी किसी के प्रति मन में दिल में कुछ रखा तो अपना दर्पण मैला हो जोयगा। फिर अपने को ही नहीं देख पायेंगे कि मैं राइट हूँ या राँग हूँ। किसके प्रति भी मन में रखा या अपनी ही नेचर कुछ पक्की रखी तो दर्पण मैला। तो अपने आपको स्वयं को देखने के लिए दर्पण हो, पर आँख न हो तो! आँख हो दर्पण न हो तो! इसलिए पहले दर्पण साफ रखो, दूसरों को देखते हैं तो मैला होता है। पहले खुद को साफ करो। तो समर्पण माना जिसके कर्म औरों के लिए दर्पण का काम करें, वो भी समझ आये कि मुझे इतने अच्छे कर्म करने हैं। ओके।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“वरदानी मूर्त बनने के लिए अपनी जीवन से अनेकों को प्रेरणा देते चलो” (1998)

1) हम एक तरफ राजऋषि हैं दूसरे तरफ संगम के सिंहासन पर बैठने वाली महारानियां। बाबा ने कहा है कि भविष्य के सिंहासन पर तो राजा रानी बैठेंगे लेकिन मेरा दिलतख्त इतना विशाल है जो मेरे इस दिल तख्त पर सभी बच्चे बैठ सकते हैं, जिसने इस संगम का सिंहासन जीत लिया उसने विश्व का सिंहासन जीत लिया। तो हरेक अपने दिल से पूछे कि मैंने दिलाराम के दिल का सिंहासन जीत लिया है? दिखाते हैं लव-कुश ने राम को जीता। यह भी हमारे सामने एक दृष्टान्त है। हम बच्चों ने दिलाराम के दिल-तख्त को जीता है। दिलाराम बाप की दी हुई सेवा पर दिल से तत्पर हैं। दिल भी हमारी बुद्धि के अन्दर आती। जैसे प्राण माना आत्मा वैसे दिल माना आत्मा।
2) गीता के महावाक्य हैं - ‘‘नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप’’। मेरा यह सवाल उठता नष्टोमोहा बन सर्विस पर आये हैं या नष्टोमोहा बनने सर्विस पर आये हैं? स्मृति-स्वरूप बनकर मैंने सोचा यह पुरानी दुनिया क्या है, ये जीवन क्या है, इसमें मोह क्या रखें? ऐसा समझकर आये या मोह नष्ट करने के लिए आये?
3) अगर मैंने स्मृति स्वरूप होकर स्वयं को सेवा में लगाया है, माना ज्ञान स्वरूप होकर सेवा में लगे हैं। उनके साथ ही अपने सर्व सम्बन्ध, माता, पिता, बन्धू... आदि सब हैं। बाबा कहने से बाबा के गुण, शक्ति, सारी महिमा सामने आ जाती है। बाप भगवान है माना नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिमान है अर्थात् सर्वशक्तियों का वर्सा देने वाला है। ऐसे बाबा को सर्व सम्बन्धों से जानकर, सोच समझकर मैं समर्पित हुई हूँ या पांव इस तरफ रखा सिर दुनिया तरफ है? भक्ति मार्ग में सिर झुकाते हैं, दण्डवत प्रणाम करते हैं, माना पूरा ही समर्पण करते हैं। तो स्वयं से पूछो - मैं पूरी झुकी हूँ अर्थात् पूरा समर्पित हूँ?

4) वरदान तब मिलता है जब पूरा दान करते हैं, बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है, एक दो तो दस पाओ, धरती को एक दाना देते हैं तो 100 देती है। अब पूछो मैं पूरा दानी बना हूँ? भक्ति में भी ईश्वर अर्पणम् या कृष्ण अर्पणम् करते हैं, तुम किसी मनुष्य को दान नहीं देते, तुम सब मुझ शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता है। ज्ञान का, शक्ति का, गुणों का, यह खजाना तुम बांटते हो। जितना-जितना औरों को बांटते उतना स्वयं भी भरपूर होते हैं। एक दिया 100 पाया। इतना जमा होता है, जिसे कहते हैं वरदान मिलता है।

5) बाबा हमें दान देकर फिर हमसे दान कराता है। फिर वह और ही 100 गुणा भरतू होता है। भरतू होना माना वरदानमूर्त बनना। जैसे किसी गरीब को दान दिया उसने सिगरेट पी लिया तो हमारे ऊपर बोझ चढ़ा, इसी तरह बाबा ने मुझे दान दिया और अगर बाबा के मिले दान का उपयोग ठीक नहीं किया तो वरदान की बजाए श्राप हो जाता है। यह निर्णय शक्ति चाहिए। मान लो हमने किसको मुरली सुनाई, ज्ञान दिया, बाबा की याद का अनुभव कराया, जिससे आत्मा को बड़ी खुशी हुई, उसने हमें दुआ दी, यहाँ तक तो ठीक, लेकिन जब मैंने कहा ये मेरे से बहुत प्रभावित हुआ, बहुत खुश हो गया, तो यह जमा नहीं किया, स्वीकार कर गंवा दिया। अहम् भाव आया तो बैलेन्स बराबर। जो जमा किया वह माइनस हो गया - खत्म। वह दान वरदान नहीं रहा। ऐसे ही मैं कोई की बहुत मीठी सेवा कर रही हूँ, बहुत अच्छी तरह समझाती हूँ, समझाते-समझाते आत्मा की स्थिति में स्थित हो जाती हूँ उसे भी अनुभव कराया, शान्ति का लाइट अवस्था का साक्षात्कार कराया, परन्तु दूसरे क्षण उसने मेरे देह-अभिमान की अवस्था देखी तो एक तरफ हाइएस्ट स्टेज, दूसरे तरफ एक क्षण में लोएस्ट स्टेज। तो क्या सोचेगा? वरदान भी दिया फिर वापस भी ले लिया - क्या हुआ? जमा तो नहीं हुआ ना।

6) हरेक अपने से पूछे कि मैंने अपनी जीवन त्यागी बनाई है? त्याग की परिभाषा बहुत बड़ी है, जितना हम त्यागी बनेंगे उतना ही तपस्वी बनेंगे। बाबा ने कहा योग न लगने का कारण नाम-रूप में फंसते हैं, देही-अभिमानी नहीं बनते, यह हमारी चाभी है, देखना है हम कहाँ तक देही-अभिमानी बने हैं? अगर मेरे में जिद का स्वभाव है, नाम तो है जिद, लेकिन छोटा जिद का स्वभाव क्या मुझे वरदान प्राप्त करायेगा? जैसे मुझे कोई कहता - ये कार्य करना है, मैं जिद के स्वभाव के कारण कहती मैं नहीं कर सकती। लेकिन यह कार्य बाबा का है, वह मुझे करने के लिए कहता, उससे अनेक आत्माओं को हर्ष मिलता, उत्साह मिलता, कितना लाभ होगा, ना कर दिया तो उन सबका बोझ मेरे ऊपर चढ़ गया। नाम है जिद, परन्तु उसमें कितना नुकसान हुआ।

7) बाबा ने हमें अमृतवेले से रात तक हर कर्म करने के जिम्मेवार बनाया है, किसी कारण से अमृतवेले नहीं उठते। परन्तु ये भी सोचा कि मेरे उठने से कितनों को प्रेरणा मिलती है? ये प्रेरणा मिलना ही वरदान है। ऐसे ही अनासक्त-पन की जीवन देखकर सब सीखेंगे। थोड़ी घड़ी के लिए मेरे में सुस्ती है, तबियत के कारण या मेरी नेचर सुस्त है, क्या मेरी सुस्ती की नेचर औरों को प्रेरणा देगी या उसे बेमुख करेगी? सुस्ती के कारण मैं किसी को बेमुख करूँ या मैं अपना मूड आफ अर्थात् स्वीच आफ करके अन्धकार कर दूँ, तो उसका कितना बुरा प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा। कई तो बड़े फलक से कहते हैं कि आज मेरी मूड आफ है। जैसे बाबा ने कहा ओम् शान्ति। हम कहते मूड-शान्ति। अगर कोई कारण से मूड आफ भी हुई तो उसे बाबा की याद से सेकण्ड में खत्म कर दो। आज साइन्स की शक्ति वाले सेकण्ड में अन्धकार से प्रकाश कर देते हैं, हम साइलेन्स की शक्ति से मूड शान्त नहीं कर सकते?

8) हम सब ओपेन थियेटर में बैठे हैं, हमें सारी दुनिया देख रही है, हम बाबा के बच्चे हैं, नूरे रत्न हैं, आंखों के तारे हैं, बाबा ने हमें नयनों पर बिठाया है, हम आप साधारण नहीं हैं। लेकिन हम असाधारण अलौकिक हैं, हमारा बाबा निराला, हम भी निराले, बाबा हमेशा कहते बड़े तो बड़े छोटे शुभान अल्ला, आप सब बाबा की छत्रछाया, शक्ति के नीचे बैठे हो, नहीं तो आज का जमाना बहुत खराब है, आप सब एक दृढ़ संकल्प लेकर बाबा की गोद में आये हो। तो अपने से रुह-रिहान करनी है कि हमें बाप के समान बनना है। सम्पन्न बनना है, समीप रहना है।

9) जग को परिवर्तन करने वालों को पहले स्वयं को परिवर्तन करना है। मेरे जीवन का हमेशा लक्ष्य रहता बाबा की पहले दिन की श्रीमत है - आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार। दूसरा है त्याग, तपस्या और सेवा इन सबका आधार है - श्रीमत। श्रीमत में रहने से हमारी तथा सर्व की सेवा है, इसमें ही कल्याण है।

10) ईश्वरीय मर्यादा कहती है तुम्हें अन्तर्मुख रहना है, मेरी पसन्दी है बाहरमुखता, अगर मैं अन्तर्मुख न रहूँ तो दूसरों को कैसे कहेंगे। तो ये कौन सी मैंने सर्विस की? बाहरमुखता की मेरी नेचर है, अन्तर्मुखता बाबा की श्रीमत है, तो मुझे आज्ञाकारी बनना है। अगर नहीं रहती हूँ तो क्या मैंने आज्ञा का पालन किया या उल्लघंन किया? आज्ञा पालन करने में बाप का आशीर्वाद मिला, न करने में श्राप। अच्छा - ओम् शान्ति।